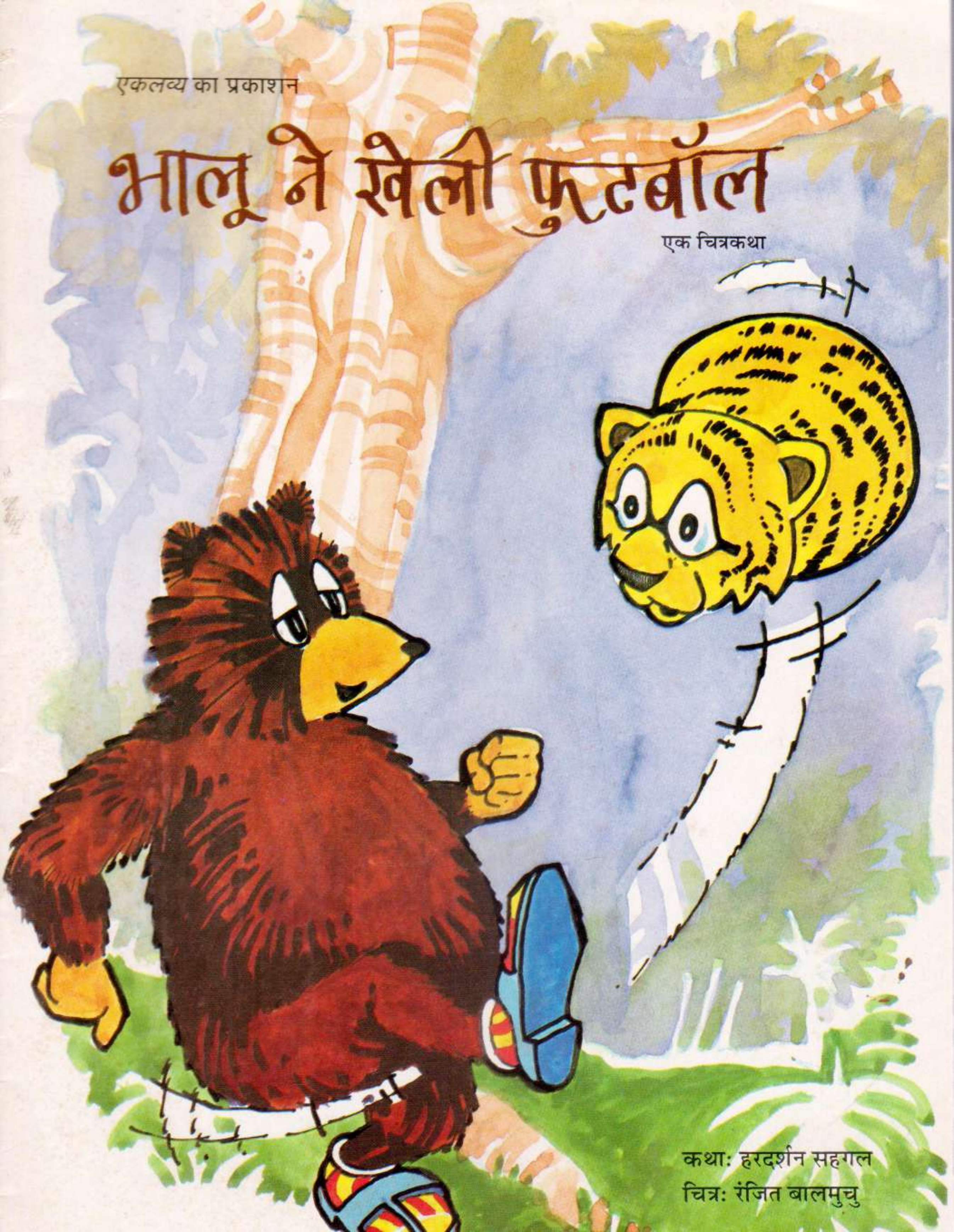
एकलव्य का प्रकाशन

भालू ने खेली फुटबॉल

एक चित्रकथा



कथाः हरदर्शन सहगल
चित्रः रंजित बालमुचु

भालू ने खेली फुटबॉल

एक चित्रकथा

कथा
हरदर्शन सहगल

चित्र
रंजित बालमुचु

एकलव्य
का प्रकाशन

भालू ने खेली फुटबॉल

एकलव्य की मासिक बालविज्ञान पत्रिका **चकमक** में प्रकाशित हरदर्शन सहगल की कहानी पर आधारित

चित्रांकन तथा आवरण : रंजित बालुमुचु
अक्षरांकन : लाल बहादुर ओझा

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन एवं सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

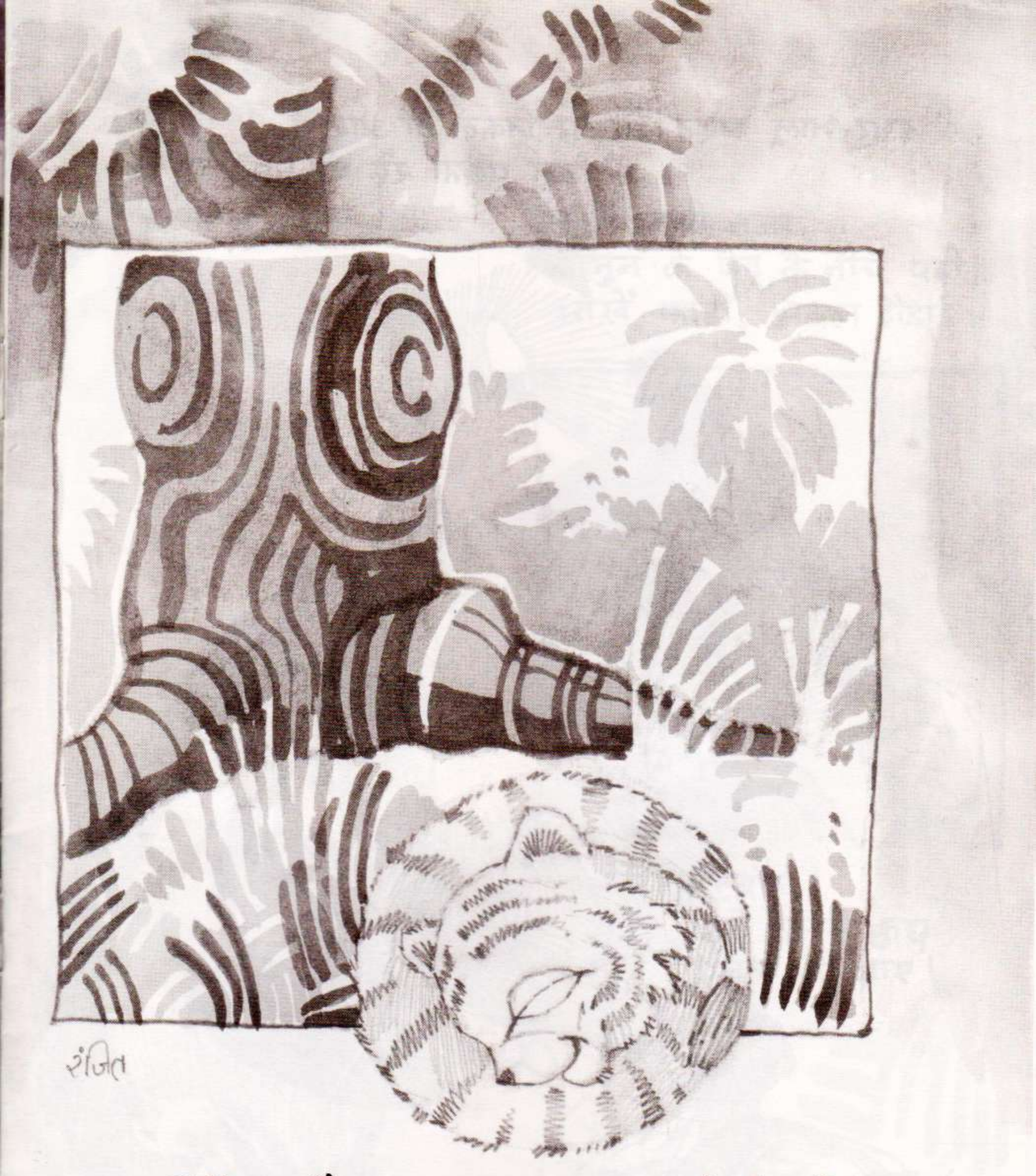
फरवरी, 2000, 10,000 प्रतियाँ
मूल्य रु. 10.00

ISBN-81-87171-28-6

प्रकाशक
एकलव्य
ई-1/25, अरेरा कालोनी,
भोपाल - 462 016, म. प्र.

भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित।





सर्दियों का मौसम। सुबह का वक्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। एक शेर का बच्चा सिमटकर गोल-मटोल बना जामुन के पेड़ के नीचे पड़ा था।

इधर भालू साहब सैर पर निकल तो आए थे,
लेकिन पछता रहे थे।



तभी उनकी नजर
जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी।
आँखें फाड़ीं, अकल दौड़ाई –



अहा फुटबॉल!
सोचा, चलो इससे कुछ
गर्मी हासिल की जाए।

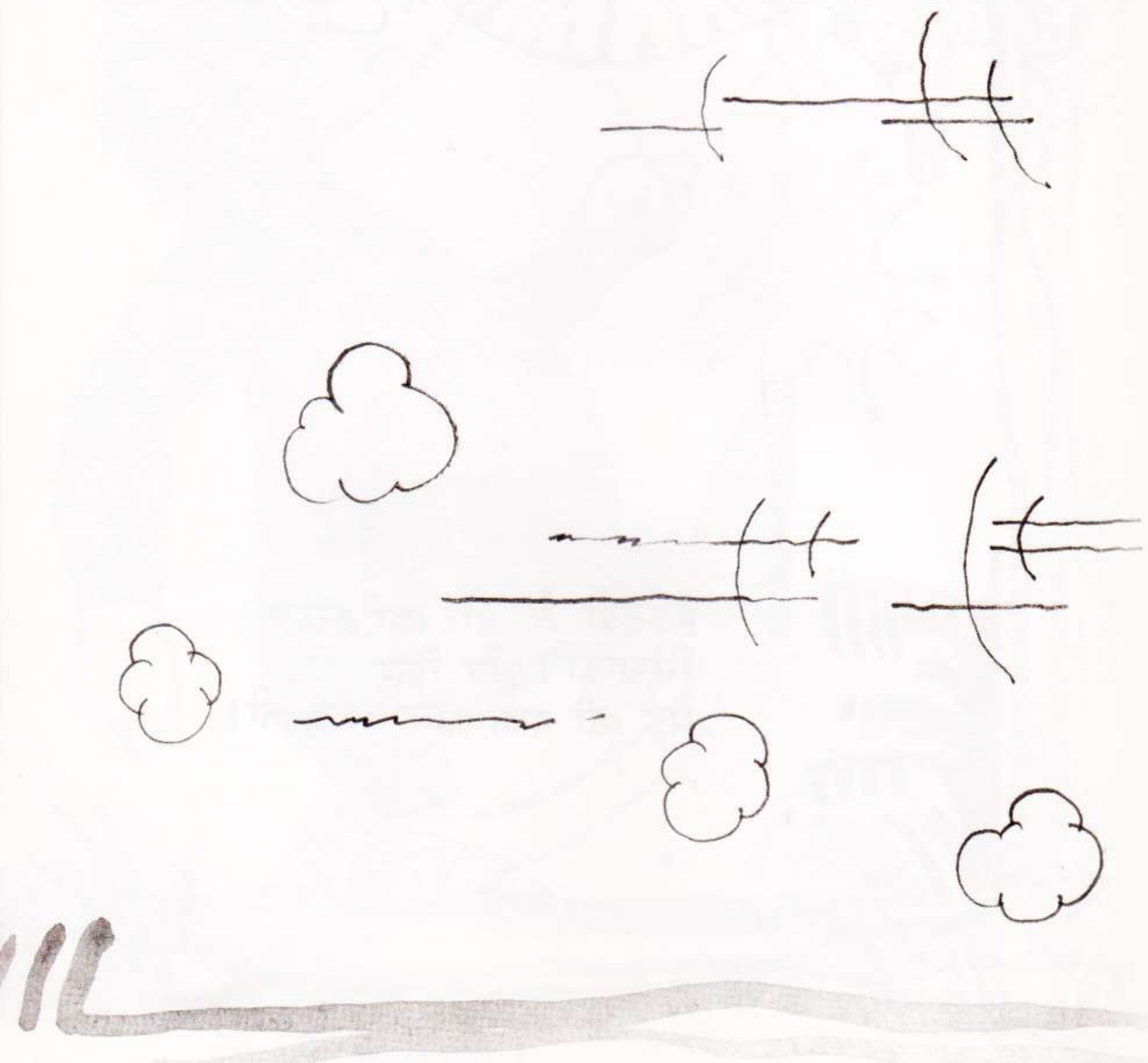


आव देखा न ताव। भालू जी ने पैर से उछाल दिया शेर के बच्चे को।



हड़बड़ी में शेर का बच्चा
चिंघाड़ा। और फिर
पेड़ की एक डाल पकड़ ली।

मगर डाल छूट गई। भालू साहब जल्दी ही मामला समझ गए। पछताए, लेकिन अगले ही पल दौड़कर फुर्ती से दोनों हाथ बढ़ाए और . . .





... शेर के
बच्चे को
कैच
कर लिया।

अरे यह क्या!
शेर का बच्चा फिर से उछालने के लिए कह रहा था।

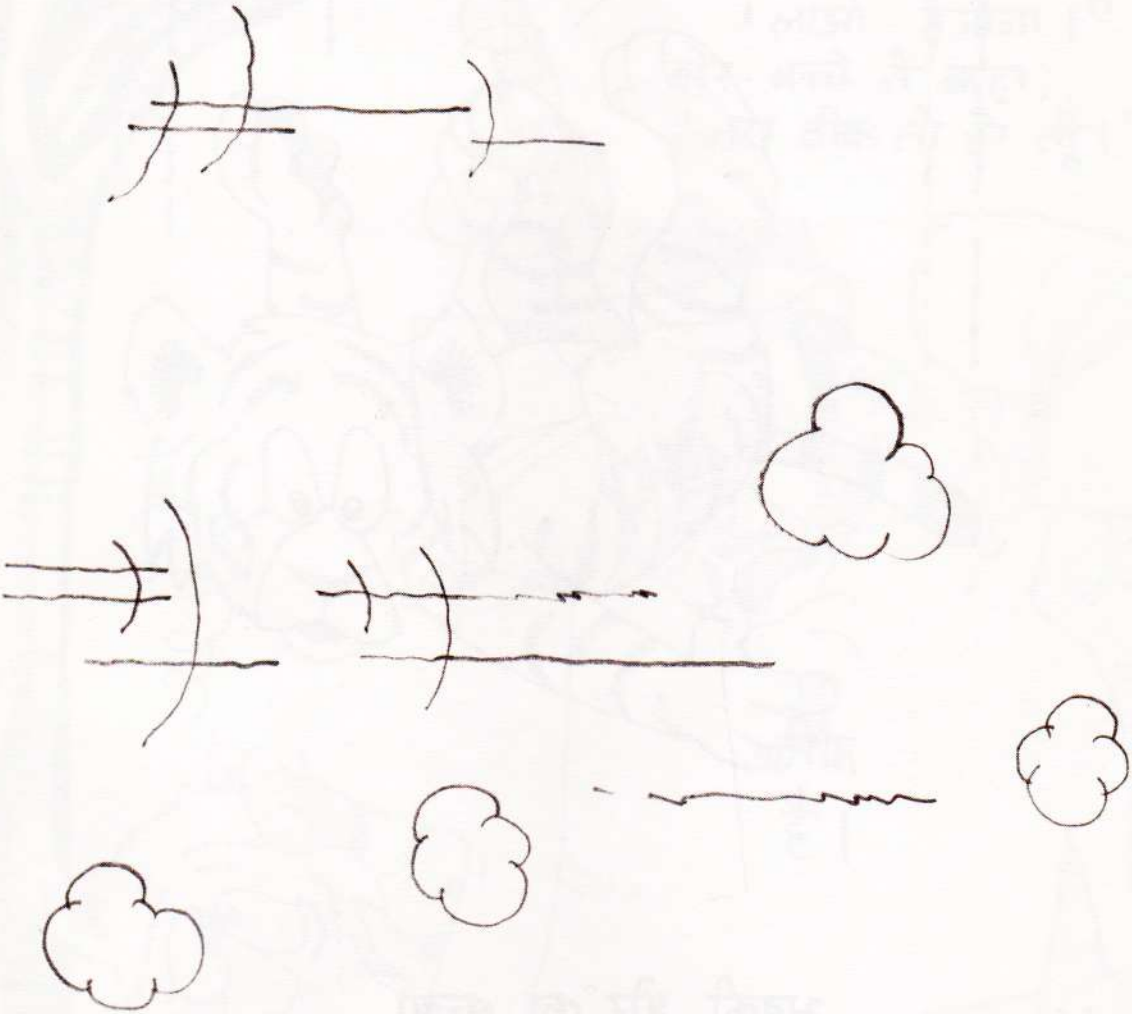



एक बार फिर भालू दादा....
दो बार..
तीन बार...
फिर
बार- बार यही होने
लगा ।
रंजित

शेर के बच्चे को उछलने में मज़ा आ रहा था।
परंतु भालू थककर परेशान हो गया था।



'ओह
किस आफत में
आ फँसा।'



बारहवीं किक लगाते ही भालू ने घर की ओर
रेस लगाई और गायब हो गया।



अबकी शेर का बच्चा
धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा।
चोट करारी लगी।

तभी पेड़ का मालिक वहाँ आया और शेर-बच्चे पर बरस पड़ा, "सत्यानाश कर दिया पेड़ का। लाओ हर्जाना।"
शेर-बच्चे ने कहा, "ज़रा ठीक तो हो लूँ।"





पेड़ के मालिक के वहाँ से जाते ही
शेर का बच्चा भी नौ-दो ग्यारह हो लिया
उसने सोचा, "जान बची तो लाखों पाए।





ISBN 81-87171-28-6

मूल्य : 10 रुपए